[Social Issues and Environmental Problems,Vol.3 (Iss.9:SE): Sep, 2015] ISSN- 2350-0530(O) ISSN- 2394-3629(P
Impact Factor: 2.035 (I2OR)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i9SE.2015.3255

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं के छात्रों एवं छात्राओं की पर्यावरण के प्रति जागरूकता एवं अभिवृत्ति का अध्ययन (इन्दौर नगर के विशेष संदर्भ में)

शिवानी श्रीवास्तव
मातुश्री अहिल्यादेवी टीचर्स एज्युकेशन इंस्टीट्यूट, सुल्लाखेड़ी, इन्दौर

सारांश
प्रस्तुत शोध का विषय छात्रों एवं छात्राओं की पर्यावरण के प्रति जागरूकता एवं अभिवृत्ति का अध्ययन करना है ।
जागरूकता जानने हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया इन्दौर शहर के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के 11 वीं एवं 12वीं के विद्यार्थियों का चयन यदृच्छिक विधि द्वारा किया गया । न्यादर्श में 400 छात्र एवं 400 छात्राएँ कक्षा 11वीं एवं 12वीं शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों से लिये गये । इसमें पर्यावरण जागरूकता मापन के लिए डॉ. प्रवीण कुमार झा द्वारा निर्मित Awareness Ability Measure एवं पर्यावरण अभिवृत्ति मापन के लिये डॉ. श्रीमती हसीन ताज, बैंगलोर द्वारा तैयार की गई मापनी का प्रयोग किया गया है । पर्यावरण जागरूकता एवं अभिवृत्ति के प्रति विद्यार्थियों में कमी पाई गई है । अतएव विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति अवचेतना को जागृत किया जायें ।

प्रस्तावना
मानव ने पर्यावरण के बारे में शायद ही कभी इतनी चिन्ता पदर्शित की होगी जितनी कि हमें वर्तमान में देखने को मिलती है । ब्रह्माण्ड के विभिन्न क्षेत्रों में इतना अधिक प्रदूषण फैलता ही जा रहा है । अतः पर्यावरण के प्रति जागरूकता रखना आज हमारी सबसे बड़ी आवश्यकता है । जल, थल, नभ, वायु में हो रहे निरन्तर परिवर्तनों ने मानव को पर्यावरण की समस्या पर फिर से विचार करने हेतु बाध्य किया गया है ।
पर्यावरण शब्द का अर्थ एवं परिभाषा : पर्यावरण शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है । 'परि' और 'आवरण' जिसका अर्थ हुआ जो हमें चारों ओर से ढके हुए है या आवृत्त किये हुए है, वह पर्यावरण है । Environment शब्द Latin भाषा के 'Environ' से बना है जिसका अर्थ है 'Around us' अर्थात् जो वस्तुऐं हमें चारों तरफ से घेरे हुए है वह पर्यावरण के अंतर्गत आती है ।

आधुनिक पर्यावरणविदों ने पर्यावरण को इस प्रकार से परिभाषित किया है–
''पर्यावरण में वह सभी भौतिक, रासायनिक, जैविक एवं सांस्कृतिक कारक आते हैं जो किसी भी तरह से जन्तुओं के जीवन को प्रभावित करते है।''
पर्यावरण शिक्षा की आवश्यकता : पर्यावरण के घटकों की क्रियात्मक संबंधों की जानकारी देना । पर्यावरण चेतना उत्पन्न कराना और पर्यावरण के प्रति अवबोध विकसित करना। विभिन्न विषयों में पर्यावरण संबंधी शोध की व्यवस्था करना । पेड़ और वनस्पति ही केवल कार्बन डाई ऑक्साईड (CO_2) को प्राण वायु ऑक्सीजन (O_2) में परिवर्तित कर सकते है । अतः वायुमण्डल में ऑक्सीजन की आवश्यक मात्रा बनाये रखने तथा (CO_2) की वृद्धि से होने वाली पर्यावरणीय विकृतियों से अवगत कराने हेतु व्यक्तियों को 'करने' या 'न करने' (do's and do not's) को बातें बतानी हैं ।
पूर्व अध्ययन की समीक्षा :

त्रिपाठी, नरसिंह (2000)ए ''विज्ञान पाठन पुस्तक में पर्यावरणीय घटकों के लिये सहगामी कलापों का विकास''
निष्कर्ष –
(ख) पर्यावरण शिक्षा हेतु कम्प्यूटर पर आधारित अनुदेशात्मक सामग्री का उपयोग किया जा सकता है ।

विस्वाल, धीरज कुमार (2002), इन्दौर में उच्चतर माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की पर्यावरणीय जागरूकता का अध्ययन
निष्कर्ष –
(ख) पुरूष एवं महिलाओं को पर्यावरण जागरूकता में भी कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अध्ययन की औचित्य : जागरूकता के परिप्रेक्ष्य में अब तक अध्ययन सर्वक्षण के रूप में हुआ है परन्तु अभी तक इन्दौर के उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं के छात्रों एवं छात्राओं की पर्यावरण के प्रति जागरूकता एवं अभिवृत्ति का अध्ययन पर कार्य नहीं हुआ है । अतः इस विषय का चयन किया गया है ।

अध्ययन का सीमांकन :
अध्ययन का सीमांकन निम्न प्रकार से है –
1. इस अनुसंधान समस्या को विद्यार्थियों की पर्यावरणीय अवचेतना व अभिवृत्ति तक सीमित रखा गया है।
2. अध्ययन को उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों तक सीमित रखा गया है, जिसमें कक्षा 11वीं व 12वीं के विद्यार्थी शामिल किये गये ।
3. अध्ययन का क्षेत्र इन्दौर के शहरी विद्यालयों तक सीमित रखा गया है । इन्दौर के शहरी क्षेत्र में मध्यप्रदेश बोर्ड से मान्यता प्राप्त अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय 281 है तथा शासकीय विद्यालय 49 है । अतः शोधकर्ता द्वारा न्यादर्श का वैज्ञानिक आधार पर सीमांकन किया गया है जिसके तहत् इन्दौर शहर से आठ विद्यालयों का चयन किया गया है ।

समस्या कथन :
शिक्षा जगत की समस्याऐं अनन्त है । प्रत्येक समस्या समाधान चाहती है । समस्या हमेंशा बहुमुखी होती है। अतएव समस्या का ओज निकालना अत्यंत आवश्यक होता है इसके लिए उसके विभिन्न पहलुओं को दृढ़ कर समाधान खोजना शोधकार्य को निम्नांकित चयन किया है –''उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं के छात्रों एवं छात्राओं की पर्यावरण के प्रति जागरूकता एवं अभिवृत्ति का अध्ययन'' (इन्दौर नगर के संदर्भ में)

उद्देश्य :
1. इन्दौर नगर शासकीय एवं अशासकीय कुल छात्रों की पर्यावरण जागरूकता तथा शासकीय एवं अशासकीय कुल छात्राओं की पर्यावरण जागरूकता की तुलना करना ।
2. इन्दौर नगर में शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के 12वीं कक्षा के छात्रों की छात्राओं की पर्यावरणीय अभिवृत्ति की तुलना करना ।

परिकल्पनाऐं :
1. शासकीय एवं अशासकीय कुल छात्रों की पर्यावरण जागरूकता तथा शासकीय एवं अशासकीय कुल छात्राओं की पर्यावरण जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं होता ।
2. शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के कक्षा 12वीं के छात्रों एवं छात्राओं की पर्यावरण अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है ।

न्यादर्श :
इस शोध हेतु इन्दौर नगर के 8 विद्यालय से कक्षा 11 एवं 12 के 400 छात्र–छात्राओं का चयन किया गया है । इसे यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया ।

उपकरण :
विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता का मापन करना है इसके लिए डॉ. प्रवीण कुमार झा द्वारा निर्मित Envirment Awareness Ability Measure का उपयोग किया गया है एवं पर्यावरण की अभिवृत्ति का मापन

करने के लिये डॉ. श्रीमती हसीन ताज, बैंगलोर द्वारा तैयार की गई पर्यावरण अभिवृत्ति मापनी का उपयोग किया गया है ।

प्रदत्त संकलन एवं प्रयुक्त सांख्यिकी :

प्रदत्त संकलन के लिये इन्दौर के शहरी विद्यालयों के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में पढ़ने वाले 400 विद्यार्थियों पर अध्ययन किया गया । 200 छात्र, 100 शासकीय, 100 अशासकीय, 50 ग्यारहवीं के छात्र एवं 50 बारहवीं कक्षा के छात्र । इसी प्रकार 200 छात्रायें, 100 शासकीय एवं 100 अशासकीय, 50 ग्यारहवीं के छात्र एवं 50 बारहवीं कक्षा के छात्राओं का चयन किया गया ।

<u>प्रयुक्त सांख्यिकी</u>

1– मध्यमान (Mean) – $M = A + \varepsilon \frac{fx}{N} xi$

2– मानक विचलन – $\sigma = i \sqrt{\frac{\varepsilon f x^2}{N} - \left(\frac{\varepsilon f x}{N}\right) 2}$

3– "t" परीक्षण – $t = \frac{\bar{X} - \bar{Y}}{\sqrt{\frac{\sigma 2}{N_1} + \frac{\sigma 2}{N_2}}}$

4– सहसम्बंध – $\gamma = \frac{\varepsilon (X - \bar{Y}) (Y - \bar{Y})}{\sigma x \, \sigma y}$

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं निष्कर्ष :

सारणी संख्या (एक)

संक्रं	विद्यार्थियों के प्रकार	N	M	σ	t
01	कुल छात्र	200	20.53	3.51	0.23
02	कुल छात्रायें	200	20.49	3.25	

सारणी संख्या (दो)

संक्रं	छात्रो/छात्राओं का प्रकार	N	M	σ	t
01	शासकीय छात्र कक्षा 12वीं	50	174.9	14.0	0.23
02	अशासकीय छात्र कक्षा 12वीं	50	173.8	14.0	
01	शासकीय छात्रायें कक्षा 12वीं	50	167.8	13.3	2.52
02	अशासकीय छात्र कक्षा 12वीं	50	174.2	12.0	

शोध के निष्कर्ष

प्रथम परिकल्पना के असत्य सिद्ध होने के कारण शासकीय व अशासकीय कुल छात्रों की पर्यावरण जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

कक्षा 12वीं में पढ़ने वाले छात्रों एवं छात्राओं जो शासकीय व अशासकीय विद्यालयों में पढ़ते है पर्यावरण अभिवृत्ति में 0.01 स्तर पर अंतर होता है । शेष परिस्थितियों में पर्यावरण जागरूकता तथा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया ।

सुझाव

1) प्रायमरी स्कूल के विद्यार्थियों में पर्यावरण अवचेतना एवं अभिवृत्ति का अध्ययन किया जा सकता है

2) बड़े–बड़े महानगरों एवं नगरों के विद्यार्थियों एवं सामान्य जनता में पर्यावरण के प्रति अवचेतना एवं अभिवृत्ति का अध्ययन किया जा सकता है।

सन्दर्भ

1. *अग्रवाल, पी.के. ''पर्यावरण एवं नदी प्रदूषण,'' आशीष पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1993*
2. *Attarchand; "Environmental Challenges, a global survey" UDH Publisher, Delhi 1985*
3. *Best, J.W., "Research in Education" Prentice Half of India pvt. Ltd. New Delhi 1997*
4. *Buch, M.B. "Fourth Survey of Research in Education" NCERT 1983.191*
5. *चन्द्रा, संस ''पर्यावरण एवं मानव स्वास्थ्य'' आर्य पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 1985*
6. *गोयल, एम.के. ''पर्यावरण शिक्षा,'' विनोद मंदिर, आगरा, 2005*